707

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

आह्वानांक Call No. _____

अवाप्ति सं० Acc. No. 707

891.431
P192H.

RECEIVED
10 AUG 1931
707

सब हक़ राखवें हन

नवां किस्सा

हिन्द दा सितारा

कृत

कवि एम. एस. पंछी जी
सियालकोट निवासी

मिलने का पता:—
लाला रामदित्तामल एण्ड संज़
पुस्तकां वाले लोहारी दरवाज़ा
लाहौर।

प्रिंटर अते पब्लिशरज़ लाला रामप्रशाद
पुस्तकांवाले लोहारी दरवाज़ा लाहौर ने
विरजानन्द प्रेस मोहनलाल रोड
लाहौर विच छपाया।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 707
Date 18.12.71
GOVT. OF INDIA

सरहदी शेर

दोहरा

पंछी दास गरीब दी, सुनो अरज़ महाराज ।
आस रखी मैं तुध दी, रखो मेरी लाज ॥

खोल सुनावां हाल मैं, हरिकृष्ण दा कुल्ल ।
धरमी लाल न लभदे, लैन जाइये जे मुल्क ॥

तरज़ तेलू

भैन – जिनां आपने धरम ना हारे २,
दुनियां चों जस खट गये, अम्मीएं २ ।
नी धरमी लाल पुत्तर नित्त जम्मीएं ॥

मां– जिनां धुरों सी लखाया नां धरमी २,
धरम उत्तों जिंद वार गए, करमी २ ।
खुशी नाल खुश हो मरे लाल धरमी ॥

भैन—ओहतां मरनों मूल न डरदे २,
जिनां नूं आस ईश्वर दी, अम्मीएं २ ।
धरमी लाल पुत्तर नित्त जम्मीएं ॥

मां—राजगुरु ते भगत सिंह शेर दाराज २।
नाल सुन सुखदेव दा करमो करमी २।
खुशी नाल खुश हो मरे लाल धरमी।
भैन—असी हिंद दी अजादी लैणी असीं २।
फांसी उते चढ़ चढ़ के अम्मीए २।
धरमी लाल पुतर नित जम्मीए।
मां—शारे मारदा भगत सिंह प्यारा २।
फांसी उते चढ़न लग्गा करमी २।
खुशी नाल खुश हो मरे लाल धरमी।
भैन—हरिकशन प्यारा वीर मेरा हरि २।
देगया पैगाम हिंद नूं अम्मीए २।
धरमी लाल पुतर नित जम्मीए।
मां—असां जान देश लों वारी असां जान २।
हिंदीओ न सो जावनां करमी २।
खुशी नाल खुश हो मरे लाल धरमी।
भैन—जिनां मारया हरीकिशन मेरा जिनां।
पापीआं दा कख न रहवे अम्मीए २।
धरमी लाल पुतर नित जम्मीए २।

मां—लाडा भगत राम न कढ़िआ साडा २ ।
सजा ओहदी पूरी हो गई करमी २ ।
खुशी नाल खुश हो मरे लाल धरमी ।
भैन—असां रब नूं सौंपना कीती असां २ ।
प्यारे वीर आपने दी अम्मीए २ ।
धरमी लाल पुतर नित अम्मीए ।

गज़ल तरज बांदी

सानूं सबक आजादी वाला,
भगत सिंह गया दसके ।
हिंदीओ मौत कोलों नहीं डरना,
फांसी चढ़ जाओ नसके ॥
बन गए देश दे प्यारे,
तिन्ने असांदे दुलारे ।
ओह तां चाढ़ फांसी ते मारे,
रस्सा कस कस के ॥
सुन लौ हरी किशन दा हाल,
जिस ने कीता खेल कमाल ।

भारत माता दा सी लाल,

फांसी ते चढ़ेया हस्स के ॥

असां हिन्द आजाद है करना,

तोप मशीन कोलों नहीं डरना ।

खुशी नाल फांसी ते चढ़ना,

जालम तांई दस्स के ॥

सुन लो हिंद वालयो भाइयो,

सारे हरिकृष्ण बन जाइयो ।

हिन्दीओ देर जरा न लाइयो,

फांसी चढ़ जाओ हस्स के ॥

भगतराम जेल विच रुलदा,

साडे दिल तों कदे नहीं भुलदा ।

साडा खून अखां विचों डुलदा,

दर्शन करिये नस्स के ॥

इक पंछी अरज गुजारे,

घर घर लाओ आजादी नारे ।

बन के देश दे पियारे,

आजादी लै लो नस्स के ॥

(१)

(कोरड़ा छन्द)

हिन्दी वाल देखके बुरा हवाल नी ।
दुःखी होएगा भैणे मेरा वाल वाल नी ॥
हिन्दीआं दी सुने न कोई पुकार नी ।
फांसी उते चाढ़ चाढ़ दित्ते मार नी ॥
हाल देख हिन्द दा तरस आया नी ।
दुःखी होके सीस मैं तली टकाया नी ॥
इक सीस लगेआं आजादी मिल जावे ।
हिन्द वाला बाग ते बगीचा खिल जावे ॥
हिन्द नूं आजाद है जरूर करना ।
हस्स हस्स फांसी उते असां चढ़ना ॥
मंग लयी शहीदी राज गुरु हस्स के ।
सुखदेव गया ओदे पिच्छे नस्स के ॥
मैनूं वी भगतसिंह ने बुलाया नी ।
खुशी नाल हस्सा मैं मौत गल पाया नी ॥

(७)

कोड़ा छन्द

खुशी नाल भैन देंवदी जवाब वे ।
पापीआं दा रहना नहीं धुन राज वे ॥
रोंवदी ए भैन मुँहों एह पुकार के ।
आया की ए हथ मेरा वीर मार के ॥
बालक अजान दिता फांसी चाड़ जे ।
पापीआं ने कीती बड़ी भैड़ी कार जे ॥
हुँदी जे मैं कोल वीर नाल जांवदी ।
खुशी नाल रस्सा गल विच पांवदी ॥
हुंदी मैं शहीद वीर नाल रल्ल के ।
करदी जवाब रब्ब कोल चल्ल के ॥

(बैंत) वीर

भैन प्यारिये अखीयां खोल ते सही,
किसनूं रो रो हाल सुनांवनीए ।
असी जिऊने हां बीबीए कोल तेरे,
रोंवें कास नूं हौंसला दावनीए ।
थोड़े दिनां नूं जुलम दी जड़ बीबी,

हुन हिंद विचों पुटी जावनीएं ।

बचे बचे दा सीस कुरबान करके,

असां हिंद अजाद करावनीएं ।

(बैंत) भारतमाता

भारत माता पुकारदी लाल मेरे

हो अखिआं तों गए दूर लोको ।

दित्ता मेरा वछोड़े ने साड़ सीना,

होया भुज के वांग तंदूर लोको ।

बेगुनां नूं फांसी ते चाढ़ देना,

नवां निकलया एह दसतूर लोको ।

पंछी मौत दी घोड़ी ते चढ़े लख्खां,

भारत माता दे चमकदे नूर लोको ।

इतलाह

किस्से, कहानीआं, नावल अते नाटक, सीहरफीआं अते सुन्दर पुस्तकां—हिंदी, गुरमुखी अंग्रेजी अते उरदू विच हेठ लिखे पते तों मंगावें :—

लाला रामदित्ता मल्ल एंड सन्ज,

पुस्तकां वाले, लुहारी दरवाजा लाहौर ।